

દાંડણ - 6
વિભાગ - A

જીકવ
15/4
(કુલ ગુણ - 80)

* નીચેના 1 થી 40 ગુણો સરખાત ઇલ
[સૂચક નં 1 ગુણ]

* OMR પત્રકમાં કો-તે ગુણના જવાબ પર ● નેનથી ઘટ્ટ કરવું.

1	A	21	B
2	B	22	C
3	C	23	A
4	A	24	B
5	A	25	B
6	B	26	C
7	C	27	A
8	A	28	B
9	B	29	C
10	B	30	C
11	C	31	A
12	A	32	B
13	B	33	C
14	C	34	A
15	C	35	A
16	A	36	B
17	B	37	C
18	C	38	A
19	A	39	B
20	A	40	B

पृष्ठा-1 (2) वैज्ञानिक डाक्टो आपो. (उत्तर त्रैल) (6)

(1) रसास्त्रिकता इत्यस्य विधानं यत् नही. आधी तेनी निहाल इन्पोस्त्र आतर जनावीन ह जमीनमां हातीनी इरी शक्य नहि. रसास्त्रिकता इत्यस्य अलगाववाधी हा निहाल वायु मुक्त इरे ह. आधी तेनी अलगावीनी निहाल इरे शक्य नहि. जथा मुक्तिरना रसास्त्रिकता पुनः निर्माणं नहा यद्य शक्यं नही. रसास्त्रिकता इत्यस्य यथा रूहे तां त इत्यस्य वर्ष रूहे नहा रसास्त्रिक स्वभावमां रूहे ह. आधी रसास्त्रिकता इत्यस्य निहाल गंभीर अवस्था ह.

(2) सुलक्षित सोयनी अमिश्रित अवतलमां दूरची इरी. अर्ध तेम दारी तर गोकुलमां तेनी उत्तर पूर्व उत्तर दिशा अनी दक्षिण पूर्व दक्षिण दिशा जतावी ह. आ परधी दिशाओ मही शक्य ह तेची दिशा मही वा माटे वपुराता हांकार्यमां सुलक्षित सोय. उपायमां लेवाय ह.

(3) डायना प्यालामां जरु लववाधी प्यालानी जहावनी अघाटी इंडी नही ह. इयामां पाणीनी जावप रूहेली ह. इयामां पाणीनी जावप डायना प्यालानी जहावनी इंडी अघाटीने अडडे ह. त्याक जावप इंडी नही ह. इंडी जावप धनीलवन नामी तेनुं पाणीनां नाना रीपामां उपांतर वायु ह तेची डायना प्यालामां जरु लववाही ह. तेन तारी तेनी जहावनी अघाटी तर पाणीनां रीपां जाऊ ह.

- (4) (1) वस्तु पर जता मुक्तिरना नाही इंडी शक्य आणही आंषमां पुनः तो ते वस्तु अर्ध शक्य
 (2) अंधारा अंधारामां मुक्तिरना हीती नही
 (3) तेची वस्तु पर मुक्तिरना जता नही अनी वस्तु अर्ध शक्य नही

पृष्ठा

(4) प्रश्नोत्तरां दुडमां च्याज लजा. [गमने ते ले] (4)

(1) रत्नां नृपण, नृपण्य भारे चौर नीकेन अंगुष्ठेनो धरति ही :->

- (1) तेना नहो गानां अने ओ ह्य हीय ही. नाहीनी व्युत्त ना समये नहोनु दुडमां आंतर थाय ही नैकी प्राधोत्सर्जन द्वारा नाही ओ ह्य गुमावाय ही
- (2) तेनुं प्रकांड अने तेनी शाजाओ लीली हीय ही, तेना हारा ते पुकारासंहीपहांगुं हाप ही ही
- (3) तेनुं प्रकांड गुं अने नीहापुंते स्तरही व्यापवित हीय ही; ही नाहीनी अजवी शाय्यामां महर करे ही
- (4) तेना नून जमीनमां नून तीउं नुकी अय ही. अने नाहीनुं शोपहा करे ही.

(2) डीरगपुलना दुडडा (3) ना रोमाओ वरमे जयाप हीय ही, जेमां पुवा लराथली हीय ही. जपारी इ न नाहीमां नापीओ हीने त्यावे इ मां रतेली पुवा लहारे, नीकली अय ही. अने पुवाणा रचाने नाही लराथ अय ही. अथा इमां रतेली जयाप रराथ अय ही. इमां नाही लरावाथी ते नाहीमां अंडीयाप ही.

(3) जे पदायांमां नुकारा भजे ही. तेने नुकाराना स्त्रीतां उहे ही नुकाराना स्त्रीतां ले नुकारना ही.

- (1) नुकारना हुदरती स्त्रीतां :-> उदा. मूषी, तारा, अजागिपी
- (2) नुकारना हुतिन स्त्रीतां :-> उदा. इगस, योर्क, गीहापली, वीज्यानी लल्ल, वगैरे.

प्रश्न-2 (ख) तदावत लजा :-> [गमने ते जहा] (6)

- | | |
|---|--|
| <ul style="list-style-type: none"> (1) ते <u>अभय</u> (2) ते <u>प्रीति</u> ले ही. (3) ते <u>स्वसन</u> करे ही. (4) ते <u>हृदय</u> अने <u>प्रमलन</u> करे ही. (5) ते <u>वृद्धि</u> अने <u>विकस</u> पावते ही. (6) ते <u>गौताना</u> जेवो लीओ सभुव उत्पन्न करे ही. | <ul style="list-style-type: none"> (1) ते <u>निर्भय</u> (2) ते <u>प्रीति</u> लेतुं नधी. (3) ते <u>स्वसन</u> करुं नधी. (4) ते <u>हृदय</u> अने <u>प्रमलन</u> करुं नधी. (5) ते <u>वृद्धि</u> अने <u>विकस</u> पावतुं नधी. (6) ते <u>गौताना</u> जेवो लीओ वस्तुं उत्पन्न करे ही साकतं नधी. |
|---|--|

(2) पारदर्शक

अपारदर्शक

(1) तेभांची प्रकाश पराव धाप ही.

(1) तेभांची प्रकाश पराव धाता नही.

(2) तेनी पडछायो पडतो नही.

(2) तेनी पडछायो पडते ही.

(3) डाय, ग्लास, इत्या र्थी पारदर्शक नद्याथी ही.

(3) दीवाल, लाकडुं, गुंडुं वगैरे अपारदर्शक नद्याथी ही.

(3) कुहरती सुंजळ

कृत्रिम सुंजळ

(1) जमीनगांची भजतां सुंजळीय पध्दतने कुहरती सुंजळ कुहेत.

(1) लोपंडना कुहरा पर सुंजळ द्याती जनावेल। सुंजळने कृत्रिम सुंजळ कुहेत.

(2) ते अनियमित व्याडारणुं होय ही.

(2) ते नियमित व्याडारणुं जनावेलुं होय ही.

(4) वनस्पति

ज्वारी

(1) ते ओड स्थलीची जीव स्थली जेव साडती नही.

(1) ते ओड स्थलीची जीव स्थली जेव साडते.

(2) सूर्यप्रकाशाची हाकरीया प्रकाश-संश्लेषण कुहेत ही.

(2) ते प्रकाशसंश्लेषण नी क्रिया कुहेत नही.

(5) नीरोनाचुं विद्युत-अवच्छेद नद्याथी र्थी विद्युत-अवच्छेद नद्याथी वगैरे कुहेत (2)

विद्युत-अवच्छेद नद्याथी \Rightarrow लोपंडनी र्थी, मानी

विद्युत-अवच्छेद नद्याथी \Rightarrow रसाखिरेक, रजत

5 अपलोकन लक्ष्मी (2)

- (1) ली मुंजडीना अपमान हुवा अपेक्षणीकी नमुठ लावत अपेक्षणी साप ही
- (2) पुडावाना भागमा अपाव दरेक पदाव शार ता तेनी पडणायी पडे ही (रमाप ही)

पुडा-3 (अ) दंडनींद लक्ष्मी (गमे ते अपेक्ष) (3)

- (1) गतिना प्रकार नीमे मुख ही
 - (1) सुरेप गति :-> तेमां पदावणी गतिमार्ग सीधी रेखांमां हीप ही. लंडुंमांवां छुटेला नीलीनी गति सुरेप गति ही
 - (2) वक्रगति :-> तेमां पदावणी गतिमार्ग वक्ररेखा हीप ही डीडीनी गति, उडता मरकरनी गति वक्रगति ही.
 - (3) वर्तुलाकार गति :-> हीरी वी जांदील पध्दरनी हीप वी नीपगोल स्थितां ते वर्तुलाकार गति करे ही वीरणीनी नंभाना नांभियांनी गति वर्तुलाकार गति ही.
 - (4) आपत गति :-> वस्तु अपेक्ष निश्चित समय सांतवात नही नीवात गतिपु पुनरापेक्ष करे ता तेनी आपत गति छु हे लोलकनी गति आपत गति ही
- (2) वपरावेल डागजनी नलावी तेनी भावी लवावी तेमांवां नवा हागल लजावानी जेडिपानी डागजनुं पुनः निर्माहूड इहे ही

डागजना पुनः निर्माहिना ना सापदा :-> (1) डायो भाल लायथी वगर अपेक्ष पगे नवा डाया लवावी शक्य छे
 (2) नवां पुषी डापवानी जर नसती नही. साके नयापिरहणी मुख्यान थकुं नही.

(अ) उपयोग लक्ष्मी :-> (गमे ते प्रथ) (3)

- (1) पवनचक्की :-> (1) विकृत- उर्ध्व उत्पन्न करवा मारी
(2) अनाज हलवानी हांते नलावनी

(2) डोंडापंजा :-> तेनी उपपीठ विमानमां, दखियाई शुद्धामुक्त
अने अक्षुभ्रेशमां दिशा भक्षुवा माटे थाप छी

(3) विद्युत डीप :-> विद्युत डीपनी उपपाठ विद्युत स्तरीत
तरीडी रेडिया, धडियाली, डमोरा, रावरी, रिमोड,
गंस गीकर, डेरलांड खडकां मां कोरे मां थाप छी

(A) डवा :-> (1) लक्ष्मीआना अने विमानना डुडुपन माटे

(2) ग्राहमस अने पेट्रोमेकसनी नंप भारपा माटे

(3) लीजना डूलापवामां तथा पुषपनी परागवचनां
डूलापवामां मद कर छी

(4) डडां सूक्ष्म छल ते परा डुवाने आलकी छी

(5) साइडल, स्फुरर, रिष्ठा, मोटरकार, रूड रानी

विमान तथा गाडाना नडांमां डुवा लवपामां थाप छी

(8) व्याख्या आपो :- (गमे ते ग्रहा) (3)

(1) गति :-> आगयनी साथी स्थितिमां धता डेरकारनी
गति डहे छी

(2) विद्युत परिपथ :-> विद्युत प्रवाह लुठवाना आरंभ मार्ग
विद्युत परिपथ डहे छी

(3) प्रकाशित नदार्थ :-> ते नदार्थ प्रकाश उत्पन्न करी छी ते
प्रकाशित नदार्थ डहे छी

(A) नारलासड नदार्थ :-> ते नदार्थमां डी प्रकाश उत्पन्न
(थोडी) नसार पर्य बाडी छी तेन नारलासड
नदार्थ डहे छी

(अ) गुहासुर ज्वाल लक्ष्मी: (गने ते ले) (6)

① लीली वनस्पति दिवसे गुहासुरासंस्पर्शकाली- द्विपात्रां वातावरणानां शर्करा उपोष्मायते वायुनी उपपीय इत्युक्ते अने अण्डिसक्री वायु मुडत इत्येव वनस्पतिसीम गुहासुरासंस्पर्शकालां गुहा इत्येव अण्डिसक्री वायु प्राणिकी व्यवसयनां ले एते अने डाण्डे उपोष्मायते वायु मुडत इत्ये एते प्राणिकीये व्यवसयनां गुहा इत्येव डाण्डे उपोष्मायते लीली वनस्पतिते गुहासुरासंस्पर्शकाली द्विपात्रां उपपीयते जने एते आरीते वातावरणानां अण्डिसक्री अने डाण्डे उपोष्मायतेऽनुः अमतीलन भवती गभी वनस्पति अने प्राणिकीये जेवनी अमत्पनी द्विपात्रां अण्डिसक्री गद्येव जने

② धासना मेदानां इत्ये, असलां जेवा वृक्षाहारी अने सिंहु, वाध, विता जेवा शिकारी प्राणिकीये इत्ये एते धासनां मेदानां प्राणिकीये सुपयं इत्येवा माते इत्ये इ अन्ध स्थलां भूज अथवां हीप एते अथवा इत्ये अने असलां जेवा प्राणिकीये शिकारी प्राणिकीये जेवा अने भवतां इत्येवा तेजनी दीव्याणी कस्य वदु हीवी इत्ये वनी, वाध अने विता जेवा माते इत्ये दीव्याणी कस्य वदु हीप ते जेवने मनुष्ये पदं श्रीशः मेदानी इत्ये अने मृगी इत्ये आसुर, धासना मेदानां इत्ये प्राणिकीये भवतां इत्येवा माते कस्य भूज इ अमत्पनी इत्ये

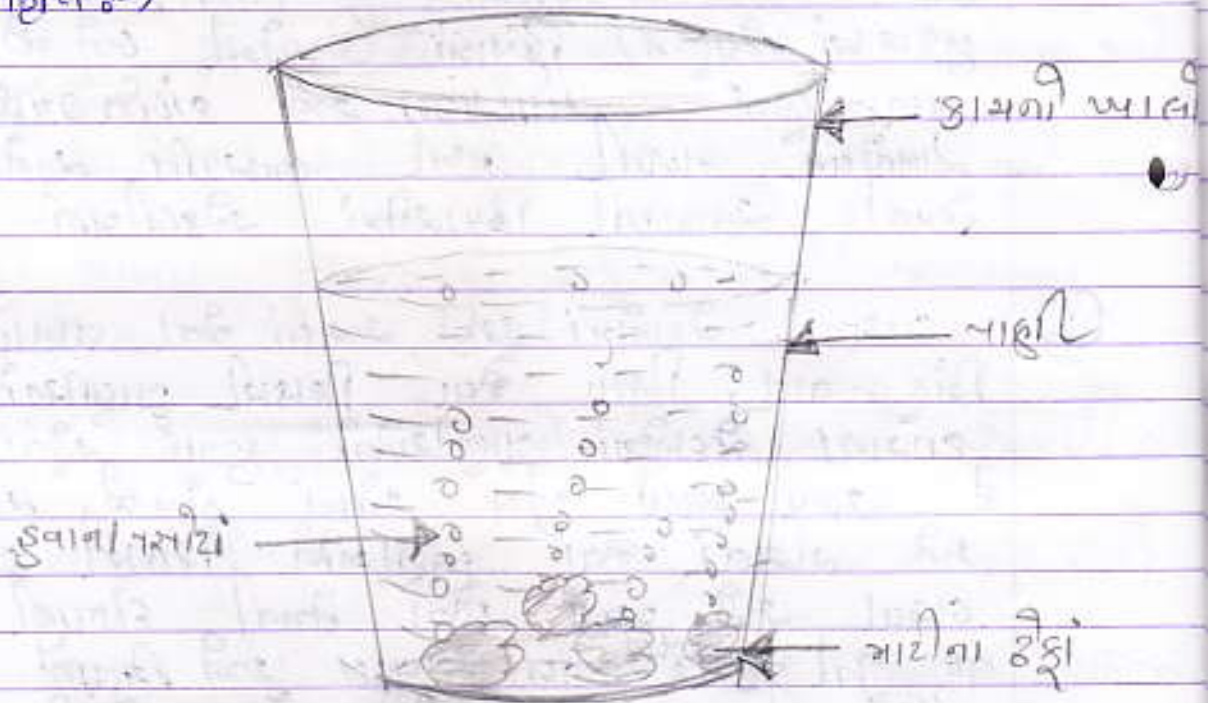
③ एलेक्ट्रिशियन रङ्ग-द्रावणे अने पक्कडना हाथा पर अण्डर अथवा पसास्त्रिकना जावरहा हीप ही अण्डर अने पसास्त्रिक विद्युत-अपाहृष्ट नद्यां एते जायते एलेक्ट्रिशियन अण्डर अथवा पसास्त्रिकना जावरहावाला रङ्ग-द्रावणे अने पक्कडने एलेक्ट्रिकने अत्र इत्ये लारी विद्युत्पुत्राह अथवा मेदानां वी एलेक्ट्रिशियनवा शरीकां पसार यथे शक्यते नथी, परिहासने तेने वीजलीनी अंशकरी लागते नथी.

(4) प्रयोगनुं आह्वित-सह वरुण इरी :- (गत्रे ते अरु) (5)

(1) : रमीननी मारीमां हुवा रहुली छी. ते माहित इरु
हुकुं :- रमीननी मारीमां हुवा रहुली छी

साधन सामुग्री :-> जेतरी मारीकु सुंहुं टोहुं, डायनी चाली, पारु

आह्वित :->



पध्दति :-> (1) जेतरीमां मारीमां ले-तहु नाना-टोहुं ल
तेने सुकुवी.

(2) डायनी चालीमां मारीमां सुंहुं-टोहुं भुडी

(3) पछी चालीमां टोहुं पर धामैथी टोहुं
हुने तेरहुं पारु रहुं.

(4) सौडी वार पछी चालीमां पारुनुं
अपलोहन इरी.

अपलोहन :-> मारीमां हुवाना परपीटां नीइवतां
जेवा भजे छी.

निर्हाय :-> रमीननी मारीमां हुवा रहुली छी

अध्या

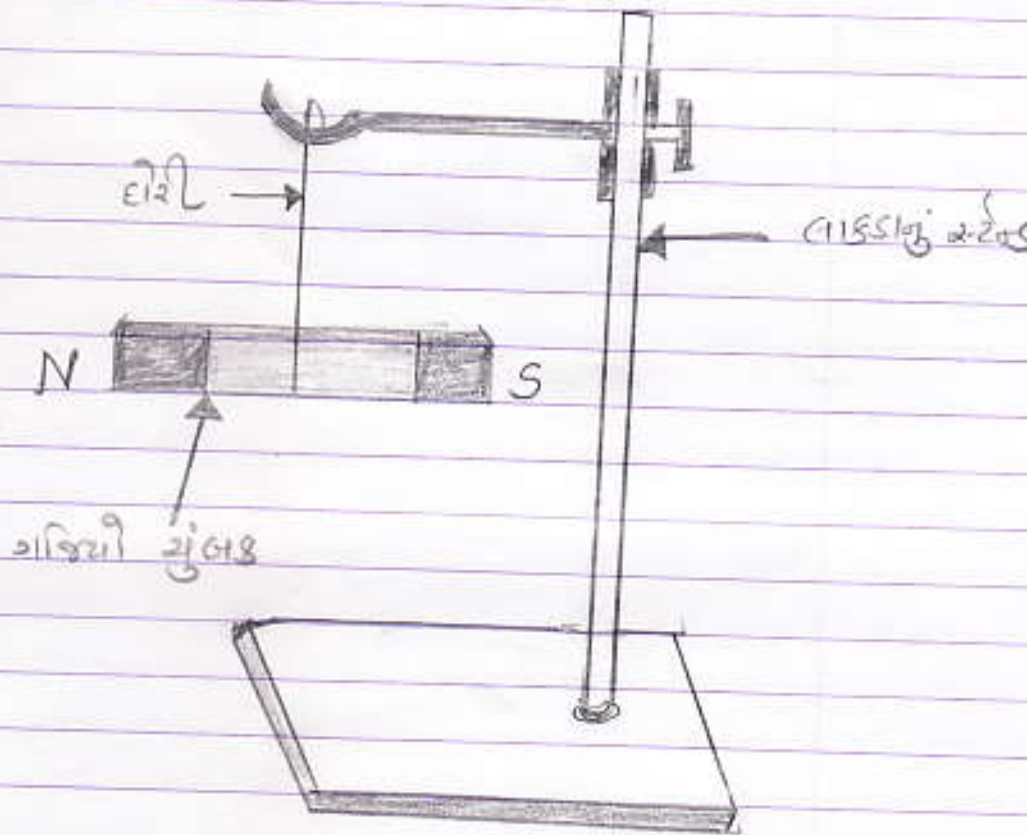
प्रयोग-2 :->

थीट (5)

* सूचना :-> मुड़व रीत करी शई तेम लउकावैला गजिया
 मुंजडना उत्तर धुप उत्तर दिशाभां अणे दक्षिण
 धुप दक्षिण दिशाभां स्थिर थाप हवे

साधन-सागुणी :-> गजिया मुंजड, लाड्डाजुं अरंड, एरी.

आकृति :->



- पद्धति :->
- (1) ओक गजिया मुंजड ली. (2) ओणभाप ते भाटे तेना कोंड ओक कोंड निशानी करी.
 - (3) गजिया मुंजडनी मध्यभां एरी बांधी तेने लाड्डाजुं अरंड परुची मुड़व रीत करी शई तेम लउकावौ. (4) च्यारे मुंजड स्थिर थाप च्यारे तेना नी कोंडानी स्थिति नोंदतल ते निशान जमीन पर करी. जंन निशाननी भेटती जेना एरी.
 - (5) एवे कोंड न्हो ओक दिशाभां एलवेच मुंजडने पडको भार अणे तेने स्थिर थाप हवे.
 - (6) करीची तेनी स्थिर स्थिति पजती जंनो, कोंडाजुं स्थान शंकित करी तमाजुं अवलोकन नोंदो

अवलोकन :-> एरीक पजती गजिया मुंजड ओक च दिशाभां स्थिर थाप हवे आ दिशा उत्तर-दक्षिण धुप हवे

निर्णय :-> मुड़व रीत करी शई तेम लउकावैला गजिया मुंजड
 उत्तर धुप उत्तर दिशाभां अणे दक्षिण धुप दक्षिण दिशाभां स्थिर थाप हवे